ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 21 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 17 अप्रैल, 2023 से रविवार 23 अप्रैल, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 | दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य प्रतिभा विकास केन्द्र- पंजाबी बाग, नई दिल्ली में पधारे सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी

प्रत्येक विद्यार्थी से स्वयं मिलकर दिया सफलता का आशीर्वाद और प्रेरणा

आर्य समाज की ओर से माननीय आचार्य श्री का किया गया भव्य स्वागत

राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण के गौरवशाली इतिहास की आदर्श परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आर्य समाज नित निरंतर नए नए आयाम स्थापित कर रहा है। आर्य समाज की स्थापना से लेकर आज तक शिक्षा सेवा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादाई सिद्ध हुआ है। आर्य समाज की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के अंतर्गत भारत के विभिन्न राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों में गुरुकुल, कन्यागुरुकुल, आर्य विद्यालय और छात्रावासों के रूप में सैकड़ों शिक्षण संस्थान कार्यरत हैं। जहां हजारों विद्यार्थी अपने जीवन को गरिमा प्रदान कर रहे हैं। इस क्रम में 5 वर्ष पूर्व स्थापित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के माध्यम से भारत की राजधानी दिल्ली में उन युवा प्रतिभाओं को जो सुयोग्य और सक्षम होने के बावजूद आर्थिक अभाव के कारण उच्च प्रशासनिक सेवा के क्षेत्र में प्रतियोगी परीक्षा में भाग नहीं ले पा रहे थे क्योंकि यूपीएससी जैसी प्रतियोगी परीक्षा में भाग लेने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण केंद्र, आधुनिक तकनीक और अन्य साधन सुविधाओं की जो मूलभूत आवश्यकताएं होती हैं, ऐसे में विद्यार्थियों को शहरों में आवास, भोजन, शिक्षा शुल्क आदि का बोझ वहन करना अत्यंत कठिन था। इन समस्त परेशानियों को अनुभव करते हुए आर्य समाज द्वारा संचालित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा अनेक विद्यार्थियों को नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसमें से दर्जनभर विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में पास होकर आज संघ लोक सेवा आयोग के तहत देश के प्रशासनिक पदों पर नियुक्त होकर सेवा के कार्यों में संलग्न हैं।

मानव निर्माण के इस अनुक्रम में 19 मई 2022 को एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग के प्रांगण में आर्य प्रतिभा विकास संस्थान सिक्किम चैप्टर का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया था। जिसमें सिक्किम के ग्रामीण क्षेत्रों के 21 विद्यार्थियों को आर्य प्रतिभा

- शेष पृष्ठ 4 पर

पंजाबी बाग स्थित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, सिक्किम चैप्टर के विद्यार्थियों को प्रेरणाप्रद उदबोधन देते हुए सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी, ध्यान पूर्वक संदेश ग्रहण करते हुए एवं आचार्य श्री के साथ सामूहिक चित्र में विद्यार्थी

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली में वेद प्रचार यात्रा निरंतर गतिशील- आर्यजनों में उत्साह की लहर

हलालपुर, औचंदी, नरेला, हरिपुर, नत्थूपुरा बुराड़ी और जहांगीरपुरी तक पहुंची वेद प्रचार रथ यात्रा

आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परम्पराओं के प्रचार-प्रसार, युवा पीढ़ी को नशामुक्त करने, परिवार, समाज और देश की रक्षा हेतु रिश्तों को बचाने, भेद-भाव मिटाने के, पर्यावरण को बचाने, महिला सशक्तिकरण एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान उत्साह पूर्वक बढ़ रहा है आगे

वेदवाणी-संस्कृत

समर्पण करो

वेद-स्वाध्याय

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते ।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः ॥
-ऋक्. 7 । 32 । 2, सा. उ. 8 । 2 । 6 । 2
ऋषिः-वसिष्ठः॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-बृहती॥

शब्दार्थ- मधौ न=जैसे मधु पर **मक्षः**=मधुमक्षिकाएँ **आसते**=बैठती हैं वैसे **इमे**=ये **ते**=तेरे **ब्रह्मकृतः**=ज्ञान-निष्पादन करने वाले भक्त लोग **हि**=निश्चय से **सुते**=प्रत्येक सुत सोम पर, प्रत्येक ज्ञान-निष्पादन के स्थल पर **सचा**=समवेत होकर, तन्मग्न होकर बैठते हैं और ये **वसूयवः**=वसु व अभीष्ट फल चाहने वाले **जरितारः**=स्तोता, भक्त लोग **इन्द्रे**=परमेश्वर में **कामम्**=अपनी इच्छा को, कामनामात्र को **आदधुः**=रख देते हैं, समर्पित कर देते हैं, **रथे न**=जैसे रथ में **पादम्**=पैर को रख देते हैं और बैठ जाते हैं।

विनय- हे इन्द्र! सदा तेरे ज्ञान का निष्पादन करने वाले, तेरे उद्देश्य से ब्रह्मयज्ञ करने वाले ये भक्त लोग जगह-जगह से तेरे ज्ञान का, तेरे प्रेम का संग्रह करते रहते हैं। जैसे 'मधुकृत्' मक्षिकाएँ जहाँ मधु देखती हैं वहीं जा बैठती हैं और इस प्रकार सब कहीं से मधु इकट्ठा करती हैं, उसी तरह ये 'ब्रह्मकृत्' लोग जहाँ कोई विकसित ज्ञानपुष्प देखते हैं जहाँ कहीं तेरे गुणों की सुगन्धि पाते हैं वहीं जा पहुँचते हैं और उसमें समवेत होकर, तल्लीन होकर तेरे भक्तिरस का आस्वादन और संग्रहण करते हैं। प्रत्येक ब्रह्मचर्चा के स्थान से, प्रत्येक हरिकीर्तन-मण्डली से, प्रत्येक शुभ यज्ञ से, प्रत्येक सद्ग्रन्थ से और प्रत्येक चेताने वाली घटना से, अर्थात् जहाँ भी कहीं तेरे लिए 'सोम अभिषुत किया' जाता है, उन सभी स्थलों से वे तल्लीन होकर चुपके से मधु को, सोमरस को, ज्ञानामृत को ग्रहण करते जाते हैं। इस प्रकार ये लोग ज्ञानधनी, भक्तशिरोमणि बनकर सब संसार के लिए भक्तिपूर्ण ज्ञान प्रदान करते हैं, संसारी प्यासों को ज्ञानामृत पिलाते हैं।

इन भक्तों में ऐसा सामर्थ्य इसलिए आ जाता है चूँकि ये सांसारिक कामनाओं से पीड़ित नहीं होते। ये निष्काम होते हैं। ये अपनी सब कामनाएँ इन्द्र प्रभु में समर्पित कर चुके होते हैं। जैसे रथ में पैर रखकर, रथ में बैठकर हमें अभीष्ट स्थान पर पहुँचने के लिए स्वयं अपने प्रयत्न से नहीं चलना पड़ता, रथ हमें स्वयं पहुँचा देता है, उसी प्रकार ये तेरे स्तोता भक्त लोग अपनी कामना-मात्र को तुझ परमेश्वर में रखकर निश्चिन्त हो जाते हैं कि तुम सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञानी प्रभु स्वयमेव उनकी सब शुभ कामनाओं को ठीक तरह पूर्ण करोगे, स्वयमेव अभीष्ट फल प्राप्त कराओगे। ओह! इस इन्द्र-रथ का आश्रय पाकर, अपने कामनारूपी पैरों को समेटकर इस रथ पर बैठ जाने पर, कोई तृष्णा-व्याकुलता नहीं रहती, कोई चिन्ता-जलन नहीं रहती, कोई झंझट व परेशानी नहीं रहती।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

हत्या जैसा जघन्य अपराध करके नाम कमाने की सोच अमानवीय और अनुचित

दुर्दांत अपराधी अतीक और अशरफ हत्या की के अलग-अलग मायने

"हालांकि चार दशक पहले अतीक अहमद ने भी किसी चांद बाबा नामक दरिंदे को मारकर अपराध जगत में एंट्री की थी। और वहीं से माफिया, हत्यारा और गैंगस्टर बनकर उसने अपनी पहचान बनाते हुए राजनीति में पैठ बनाई थी, पांच बार विधयक और एक बार सांसद रहा अतीक अपराध जगत का बड़ा नाम बन गया था। आर्य समाज हमेशा न्याय व्यवस्था पर विश्वास करता है और सभी को देश की न्याय व्यवस्था पर भरोसा करने का संदेश भी देता है। इस तरह सरेआम गोलियों से भून कर किसी को मारना हर तरह से अनुचित ही है। आर्य समाज कभी भी इसका न पक्षधर था, न आज है। लेकिन देश धर्म की रक्षा के लिए ऐसी दुष्ट प्रवृत्तियों को न्याय व्यवस्था के अनुसार दंड मिलना ही चाहिए, तभी मानवता जीवित रहेगी।"

आर्य समाज वेद के अनुसार सदा से ही मनुष्य को मनुष्य बनने का संदेश देता आया है। मनुष्य बनने का मतलब बुद्धि पूर्वक, सोच विचार कर, उचित-अनुचित को समझकर ही कर्म करने वाला। लेकिन वेद का यह संदेश उनके लिए है जो मनुष्य हो, अगर कोई व्यक्ति मनुष्य के रूप में भेड़िया हो तो उसे वेद की वाणी से क्या फर्क पड़ने वाला है। वस्तुतः मनुष्य भी कई प्रकार के होते हैं, साधारण मनुष्य वह होता है कि जो दूसरे का भला तो करना चाहता है लेकिन अगर दूसरे का भला करते हुए उसकी स्वयं की हानि होती है तो वह कहता है कि भाई मैं तुम्हारा यहीं तक भला कर सकता था, अब मेरा सामर्थ्य नहीं है। इससे आगे जो व्यक्ति अपना नुकसान करके भी दूसरे का भला करता है, उसे मनुष्य नहीं देवता कहते हैं। लेकिन एक व्यक्ति ऐसा भी होता है जो केवल अपना ही भला चाहता है और दूसरे का बुरा करता है, उसे राक्षस कहते हैं। किंतु इससे भी ज्यादा दुष्ट प्रवृत्ति उसको कहते हैं जो अपना भी नुकसान करता है और दूसरे का भी नुकसान करता है, जैसे बिल्ली किसी भी पदार्थ को खाने से पहले जमीन पर फैला देती है, उसे पिशाच कहा जाता है। लेकिन इस दुर्दांत अपराधी अतीक अहमद के ऊपर तो ये सारी संज्ञाएं कम हो जाती हैं क्योंकि वह तो एक ऐसा दानव था। जो जुर्म की दुनिया में इतना बड़ा नाम कमा चुका था, जिसकी दहशत में देश की न्याय व्यवस्था को गतिशील रखने वाले न्यायाधीश महोदय भी उसके मुकदमे सुनने से अपना हाथ पीछे खींच लेते थे। पुलिस प्रशासन भी उस पर हाथ नहीं डालता था। जेल में बैठे-बैठे भी वह लोगों को मौत के घाट उतरवा देता था और केवल वह नहीं उसका पूरा परिवार जुर्म की दुनिया में पूरी तरह से फंसा हुआ है।

माफिया से राजनेता बने अतीक अहमद के नाम पर 1985 से अब तक 100 से अधिक मामले दर्ज हैं। जबकि 50 मामले विचाराधीन हैं। 12 अन्य मामलों में वह बरी हो चुका था, जबकि दो मामले साल 2004 में तत्कालीन समाजवादी पार्टी सरकार ने वापस ले लिए थे। वहीं, अतीक के भाई अशरफ के नाम पर 53 मुकदमे दर्ज हैं। जिनमें से एक में उसे बरी कर दिया गया था। जबकि अन्य पर विचार चल रहा था। कुल मिलाकर अतीक एंड फैमिली के खिलाफ 165 केस चल रहे हैं।

जैसे को तैसा की तर्ज पर 15 अप्रैल 2023 को जब पुलिस कस्टडी में अतीक और अशरफ दोनों भाइयों को तीन हमलावरों ने मौत के घाट उतार दिया। तब उन मीडिया कर्मी बनकर आए कातिलों ने भी जो खुलासा किया वह चाहे सत्य हो या असत्य अभी जांच का हिस्सा है लेकिन नाम कमाने की चाहत और वह भी अपराध के बल पर आज की युवा पीढ़ी के लिए अत्यंत विचारणीय है। क्योंकि हमारे यहां तो युवा पीढ़ी को बड़े बुजुर्गों द्वारा आशीर्वाद देते हुए यह कहा जाता है कि पढ़ लिख कर आप अपना, अपने कुल का और अपने देश का नाम रोशन करो। किंतु यहां पर जो उन अपराधियों ने खुलासा किया उसको अगर देखा जाए तो पुलिस द्वारा दर्ज की गई एफ.आई.आर. के अनुसार पुलिस ने आरोपियों से जब पूछताछ की तो उन्होंने हत्याकांड की पूरी कहानी बताई। आरोपियों ने कहा कि वे अतीक गैंग का खात्मा करना चाहते थे, इसी को लेकर इस वारदात को अंजाम दिया। वे ऐसा करके अपना नाम और पहचान बनाना चाहते थे। शाहगंज थाने के एस.एच.ओ. राजेश कुमार मौर्य ने रविवार को बताया कि 'तीनों हमलावरों की पहचान बांदा निवासी 22 वर्षीय लवलेश तिवारी, हमीरपुर निवासी 23 वर्षीय मोहित उर्फ सन्नी और कासगंज निवासी 18 वर्षीय अरुण मौर्य के रूप में हुई है।' उन्होंने कहा कि तीनों के खिलाफ आई.पी.सी. की धारा 302 और 307 के साथ-साथ शस्त्र अधिनियम के तहत अन्य धाराओं में केस दर्ज किया गया है।

हालांकि चार दशक पहले अतीक अहमद ने भी किसी चांद बाबा नामक दरिंदे को मारकर अपराध जगत में एंट्री की थी। और वहीं से माफिया, हत्यारा और गैंगस्टर बनकर उसने अपनी पहचान बनाते हुए राजनीति में पैठ बनाई थी, पांच बार विधायक और एक बार सांसद रहा अतीक अपराध जगत का बड़ा नाम बन गया था। आर्य समाज हमेशा न्याय व्यवस्था पर विश्वास करता है और सभी को देश की न्याय व्यवस्था पर भरोसा करने का संदेश भी देता है। इस तरह सरेआम गोलियों से भून कर किसी को मारना हर तरह से अनुचित ही है। आर्य समाज कभी भी इसका न पक्षधर था, न है। लेकिन देश धर्म की रक्षा के लिए ऐसी दुष्ट प्रवृत्तियों को न्याय व्यवस्था के अनुसार दंड मिलना ही चाहिए, तभी मानवता जीवित रहेगी।

अतीक और अशरफ के हत्या को लेकर देश की राजनीति में एक अलग तरह का उत्साह दिखाई दे रहा है, इसके लिए उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था को लेकर जहां समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव और श्री रामगोपाल यादव ने निशाना साधा और कहा कि यह एक षड्यंत्र के तहत हत्या की गई है, वहीं बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी ने भी कड़ी आपत्ति जताई है।

बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी सवाल खड़े किए हैं, तो कांग्रेस के अध्यक्ष ने भी अपनी आवाज बुलंद की है, इस क्रम में फिर ओवैसी भी कैसे पीछे रहते, किंतु तुष्टिकरण की राजनीति करने वाले महानुभावों से कोई पूछे कि जब कुछ दिन पहले जेल में बैठे बैठे अतीक अहमद और उसके परिवार ने सरेआम चौराहे पर उमेश पाल की हत्या कर दी थी, तब ये लोग कहां थे? या उससे पहले राजू पाल को मौत के घाट उतारा था तब यह कहां थे। वास्तव में सरकार चाहे कोई भी हो या किसी की भी हो कानून व्यवस्था का डर सबको होना ही चाहिए। क्योंकि कानून के डर के बिना प्रदेश हो या देश जंगलराज बन जाता है और सभी राजनीतिक दलों को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देश के भविष्य के विषय में भी विचार करना चाहिए।

-संपादक

स्वास्थ्य संदेश

आरोग्यता का खजाना– तुलसी का पौधा

क्रमशः गतांक से आगे

19. काली मिर्च तुलसी और गुड़ का काढ़ा बनाकर उसमें नींबू का रस मिलाकर दिन में दो-दो या तीन-तीन घंटे के अन्तर से गर्म-गर्म पिएं। फिर कम्बल ओढ़कर सो जाएं। यह काढ़ा मलेरिया को दूर करता है।
20. श्लेष्मक ज्वर (इनफ्लुएंजा) के रोगी को तुलसी का बीस ग्राम रस, अदरक का चालीस ग्राम रस तथा शहद मिलाकर दें।
21. तुलसी की जड़ कमर में बांधने से गर्भवती स्त्रियों को लाभ होता है। प्रसव-वेदना कम होती है और प्रसूति भी सरलता से हो जाती है।
22. तुलसी की पत्तियों का रस बीस ग्राम चावल के मांड के साथ सेवन करने से तथा दूध भात या घी-भात का पथ्य लेने से प्रदररोग दूर होता है।

“आर्युवैदिक औषधियों में तुलसी एक अत्यंत उपयोगी वनस्पति है। तुलसी का पौधा लगभग सभी घरों में आसानी से पाया जाता है। हालांकि कुछ लोग इस महत्वर्पू औषधि का प्रयोग न करके केवल इसकी पूजा में ही लगे रहते हैं, जबकि तुलसी एक ऐसी औषधि है जो एक नहीं कई बीमारियों में उपयोग की जाने वाली अचूक औषधि है- जैसे हिचकी, खांसी, पित्तदोष, श्वास, वात-पित्त-कपफ को संतुलित करने में आदि, तुलसी से मुंह की दुर्गन्ध भी नष्ट होती है। आर्य संदेश के इस अंक में प्रस्तुत है तुलसी के गुण एवं प्रयोग। यहां प्रस्तुत हैं तुलसी के लाभ”

23. तुलसी की पत्तियों को नींबू के रस में पीसकर लगाने से दाद-खाज मिट जाती है।
24. तुलसी का पाउडर तथा सूखे आंवलों का पाउडर पानी में भिगो कर रख दीजिए, प्रातःकाल छानकर उस पानी से सिर धोने से सफेद बाल काले हो जाते हैं तथा बालों का झड़ना रुक जाता है।
25. तुलसी और अदरक का रस शहद के साथ लेने से उलटी में लाभ होता है। पेट में दर्द होने पर तुलसी की ताजी पत्तियों का दस ग्राम रस पिएं। इस तरह आरोग्य-दान करने में तुलसी बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमें चाहिए कि जगह-जगह तुलसी के पौधे लगाकर तथा तुलसी के बीज डालकर तुलसी का वृन्दावन बनाएं, वातावरण को शुद्ध, पवित्र कर स्वस्थ करें तथा स्वस्थ रहें।

बाल बोध

विद्यार्थी जीवन में ध्यान योग का महत्व

प्राचीनकाल में बालक एवं बालिकाओं को शिक्षक योग पद्धति सिखाते थे। उनका रहन-सहन सात्विक एवं आध्यात्मिक होता था। बच्चे प्रातःकाल प्रभु का ध्यान एवं सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय रुचि लेकर करते थे। रात्रि में शयन से पूर्व आत्मचिंतन, आत्म अवलोकन उनकी दैनिक चर्या का अनिवार्य अंग होता था।

आधुनिक परिवेश में अध्यापक अध्यापिकाएं स्वयं ध्यान-योग से कोसों दूर हैं। उन्हें खुद को जप-तप, स्वाध्याय सयंम और ध्यान-साधना से कुछ लेना-देना नहीं है तो क्या वे बच्चों को इस गहन विषय का ज्ञान देंगे? वे तो केवल पाठ्यक्रम की पुस्तकों को माध्यम बनाकर अपनी ड्यूटी पूर्ण करते हैं। परिणाम स्वरूप आजकल बच्चों का उठना-बैठना, चलना-फिरना, खाना-पीना, सोना-जागना, पढ़ना-लिखना, बोलना-चालना, हंसना-खेलना, लड़ना-झगड़ना और अध्यापक-अध्यापिकाओं के प्रति व्यवहार करना टी.वी. में दिखाए जाने वाले कार्टूनों जैसा हो गया है।

वस्तुतः ध्यान एवं चिन्तन मस्तिष्क के विषय हैं। मस्तिष्क से ही ध्यान किया जाता है और मस्तिष्क से ही चिन्तन किया जाता है। ध्यान एवं चिन्तन के लिए मस्तिष्क का निर्मल होना जरूरी है।

स्कूलों, कालेजों में ध्यान-साधना शिविरों का आयोजन जरूर होना चाहिए। शिक्षकों को भी ध्यान-साधना की जानकारी होना जरूरी है। क्योंकि आजकल जो विद्या मन्दिरों में भ्रष्टाचार, अनाचार और अभद्र व्यवहार पनप रहा है उसके और अन्य अनेक कारण भी हो सकते हैं, लेकिन सबसे बड़ी वजह तो यह दिखाई देती है कि आध्यात्मिकता का अभाव हुआ है। ध्यान-साधना से बच्चों को जो लाभ होगा वह अतुलनीय है। उनकी एकाग्रता, जागरूकता और परीक्षाओं में सफलता की अधिकतम संभावना बढ़ जाएगी।

“स्कूलों, कालेजों में ध्यान-साधना शिविरों का आयोजन जरूर होना चाहिए। शिक्षकों को भी ध्यान-साधना की जानकारी होना जरूरी है। क्योंकि आजकल जो विद्या मन्दिरों में भ्रष्टाचार, अनाचार और अभद्र व्यवहार पनप रहा है उसके और अन्य अनेक कारण भी हो सकते हैं, लेकिन सबसे बड़ी वजह तो यह दिखाई देती है कि आध्यात्मिकता का अभाव हुआ है। ध्यान-साधना से बच्चों को जो लाभ होगा वह अतुलनीय है। उनकी एकाग्रता, जागरूकता और परीक्षाओं में सफलता की अधिकतम संभावना बढ़ जाएगी। ध्यान और चिन्तनशीलता का अभाव होने के कारण ही आजकल विद्यार्थी सर्वत्र अभद्र आन्दोलन तोड़-फोड़ के कार्य करते हैं। यदि चिन्तन का प्रयोग करें तो अपने परिवार, समाज, राष्ट्र को अनेक अनावश्यक परेशानियों से मुक्त करा सकते हैं। मस्तिष्क को शरीर में सबसे उपर इसीलिए बिठाया गया है कि प्रत्येक काम सदचिन्तन करके ध्यान मग्न होकर पूर्ण करें।”

स्वस्थ और पवित्र विचारों से मस्तिष्क का परिष्कार तथा निखार होता है। अस्वस्थ और निराशाजनक विचार मस्तिष्क को रोगी बनाते हैं। अपवित्र विचार मस्तिष्क को जर्जरित कर देते हैं। वे पवित्र विचार ही हैं जो मस्तिष्क को सदा स्वस्थ रखते हैं। जीवन में आत्मचिन्तन और प्रभु का ध्यान मस्तिष्क को दिव्य बना देता है। आत्मचिन्तन से आत्मानुभूति होगी और प्रभु के ध्यान से तुम्हारे अन्दर दिव्यगुणों की स्थापना होगी। जो जिसका चिन्तन करता है उसमें उसी के अनुरूप गुणों का समावेश तथा उसमें उसी का साक्षात्कार होता है।

स्वाध्याय मस्तिष्क को भयरहित करके उसमें स्थिर मति और स्थित प्रज्ञा की स्थापना करता है। सत्संग अथवा ज्ञान महान पुरुषों की संगति से भी मस्तिष्क का निखार होता है। महान योगियों के उपदेश और प्रेरणा अज्ञानरूपी अंधकार को दूरकर विवेक शक्ति को जागृत करते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप मस्तिष्क निर्मल दर्पण बन जाता है।

चिन्तनशील विद्यार्थी न तो कभी भयभीत होता है और न ही कभी किसी के समक्ष अपनी समस्याएं प्रस्तुत करता है। वह तो अपने चिन्तन द्वारा अपने प्रश्नों का उत्तर स्वयं जान लेता है। जब भी कोई प्रश्न तुम्हारे सामने अड़कर खड़ा हो जाए, उस समय एकान्त में निश्चल मन के साथ उस पर सुसंगत एवं गहन चिन्तन कीजिए। तुम्हें आश्चर्य होगा कि थोड़ी अवधि के उपरांत तुम्हें उसका समाधान मिल जाएगा।

ध्यान और चिन्तनशीलता का अभाव होने के कारण ही आजकल विद्यार्थी सर्वत्र अभद्र आन्दोलन तोड़-फोड़ के कार्य करते हैं। यदि चिन्तन का प्रयोग करें तो अपने परिवार, समाज, राष्ट्र को अनेक अनावश्यक परेशानियों से मुक्त करा सकते हैं। मस्तिष्क को शरीर में सबसे ऊपर इसीलिए बिठाया गया है कि प्रत्येक काम सदचिन्तन करके ध्यान मग्न होकर पूर्ण करें।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य प्रतिभा विकास केन्द्र में पधारे सिक्किम के राज्यपाल

विकास संस्थान के अंतर्गत प्रशिक्षण प्रदान करने का संकल्प लिया गया था, वे सभी विद्यार्थी आज लगातार परिश्रम और पुरुषार्थ करके निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। समय समय पर आर्य समाज के अधिकारी इन सभी होनहार विद्यार्थियों से भेंट करते हैं, इनकी साधन सुविधाओं का ध्यान रखते हैं और इन्हें प्रेरित भी करते हैं। जिससे इन सभी विद्यार्थियों का मनोबल मजबूत रहता है और ये अपने लक्ष्य और उद्देश्य के प्रति समर्पित रहते हैं।

17 अप्रैल 2023 को सिक्किम

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान में पधारने पर सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी का पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत करते हुए सर्वश्री जितेन्द्र बहती जी, मनीष भाटिया जी, विपिन भल्ला जी, अजय भाटिया जी एवं अन्य महानुभाव, इस अवसर माननीय आचार्य श्री ने सिक्किम सभी विद्यार्थियों से व्यक्तिगत भेंट की, सभी व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और विद्यार्थियों को आशीर्वाद स्वरूप उपहार भी प्रदान किए।

के माननीय राज्यपाल, श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी, आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, सिक्किम चैप्टर, पंजाबी बाग, नई दिल्ली पहुंचे। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी का आर्य समाज के अधिकारियों ने पुष्प गुच्छ, पीत वस्त्र, शाल और स्मृति चिन्ह भेंट कर हार्दिक स्वागत और अभिनंदन किया। आचार्य जी ने सिक्किम के सभी विद्यार्थियों से स्वयं एक-एक कर मुलाकात की और उनका हालचाल भी जाना। सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में जुटे सभी विद्यार्थियों के चेहरे उमंग, उत्साह और उल्लास से चमक रहे थे। सभी आर्य समाज के सृजन शील वातावरण में गौरवान्वित और आशान्वित अनुभव कर रहे थे। विद्यार्थियों को महामहिम राज्यपाल जी ने अपने करकमलों से उपहार भी भेंट किये और सफलता का आशीर्वाद दिया। आचार्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में विद्यार्थियों को कहा कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए नित निरंतर परिश्रम और पुरुषार्थ करना ही चाहिए। आचार्य जी ने विद्यार्थियों को नियमित दैनिक चर्या का महत्व बताते हुए कहा कि अपने जीवन में हमेशा उत्तम आहार, नित्य प्रति व्यायाम और समय से सोना और समय से जागना सफल जीवन के लिए बहुत जरूरी है। अपने समय का सदुपयोग करना और लक्ष्य के प्रति समर्पित रहना भी अत्यंत आवश्यक है। जीवन के हर क्षेत्र में वही लोग सफल होते हैं जिनका अपने ऊपर अपना अनुशासन कार्य करता है। अतः आलस्य प्रमाद को छोड़कर नित निरंतर नियम, व्यवस्था और अनुशासन को अपनाएं, ईश्वर का धन्यवाद करें, कड़ी मेहनत से किया गया परिश्रम मनुष्य को सफलता की ओर अग्रसर करता है। जीवन की सफलता के सूत्रों में हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए की कैसी भी स्थिति-परिस्थिति क्यों ना हो अपने लक्ष्य पर ही हमें ध्यान रखना चाहिए, तभी हम सफलता की ऊंचाइयों को छू सकते हैं। यह एक सुंदर अवसर है, आप सब अपने मनोबल को मजबूत बनाएं और आगे बढ़े। आर्य समाज के इस विशेष प्रकल्प को लेकर आचार्य श्री ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज की प्रशंसा भी की। इस अवसर पर श्री जितेन्द्र बहती जी, श्री मनीष भाटिया जी, श्री अजय कालरा जी, श्री विपिन भल्ला जी, श्री अजय भाटिया जी और अन्य आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आर्य समाज सुंदर विहार का 38वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज सुंदर विहार द्वारा 14 से 16 अप्रैल 2023 तक हर्षोल्लास पूर्वक 38वां वार्षिक उत्सव मनाया गया। इससे पूर्व 2 दिन तक प्रभात फेरी का आयोजन कर सभी क्षेत्रवासियों को यज्ञ, भजन और प्रवचनों की सूचना दी गई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री प्रमोद शास्त्री जी ने कुशलतापूर्वक यज्ञ का संचालन किया और वैदिक विद्वान श्री राजू वैज्ञानिक जी ने महत्वपूर्ण विषयों पर वचन प्रवचन दिए और भजनोंपदेशक श्री राजेश अमर प्रेमी जी ने सारगर्भित, प्रेरक भजन प्रस्तुत किए।

16 अप्रैल रविवार को पूर्णाहुति के अवसर पर पांच कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने चाहे सांस्कृतिक कार्यक्रम हो, नाटिक मंचन हो, भजन गायन हो या मंच का संचालन हो सारा कार्यक्रम बच्चों ने विधि वत सफलतापूर्वक संपन्न कराया। आर्य समाज की महिलाओं ने महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती के 2 वर्षीय आयोजनों को लेकर ले लो आज बधाई, दे दो आज बधाई, शुभ घड़ी है आई, बहुत ही उत्साह पूर्वक सामूहिक भजन प्रस्तुत कर पूरे सत्संग हाल को भाव विभोर कर दिया। श्रीमती उमा वर्मा जी ने महर्षि की गाथा को तीनों दिन मधुर स्वर में प्रस्तुत किया। प्रतिदिन ऋषि लंगर की व्यवस्था रही और 300 से ज्यादा आर्य नर, नारियों की उपस्थिति से सभी गौरवान्वित थे। प्रेम सौहार्द के वातावरण में संपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुआ। **-अमरनाथ बत्रा मंत्री**

आर्य समाज देसराज कालोनी पानीपत का 36वां वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

आर्य समाज देसराज कालोनी पानीपत का 36वां वार्षिकोत्सव एवं 19वीं शताब्दी के महान क्रान्ति दूत, युग प्रवर्तक, वेदोद्धारक, नारी शिक्षा के प्रबल पक्षधर महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती दिनांक 2 अप्रैल रविवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

आचार्य श्री संजय याज्ञिक के ब्रह्मत्व में वृहद ज्ञय के द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। ध्वजारोहण श्री आत्म प्रकाश आर्य ने किया। दीप प्रज्वलन अनेक आर्य समाजों से पधारी गणमान्य महिलाओं ने किया। खतौली जि. मुजफ्फर नगर से पधारे श्री भूपेन्द्र प्रेमी ने प्रभु भक्ति के साथ महर्षि दयानन्द के उपकारों का मधुर सरस गुणगान कर सभी को आनन्दित किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मंत्री एवं कई आर्य संस्थाओं के प्रतिष्ठित पदों की शोभा बढा रहे श्री अजय सहगल जी ने मुख्य अतिथि का पदभार संभाला। आपके विचारों से उपस्थित आर्यगण गदगद हो गए।

इस अवसर पर भा.ज.पा. के प्रदेश प्रमुख ग्रन्थालय एवं ई ग्रन्थालय विभाग हरियाणा के प्रखर ओजस्वी प्रवक्ता श्री

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य समाज का प्रचार-प्रसार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वैदिक प्रकाशन, प्रकल्प

किसी भी संस्था या संगठन के विचार, मान्यताएं और परंपराओं के प्राण उसके साहित्य-पुस्तकों में समाए होते हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी से लेकर पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित तुलसीराम, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, गंगाप्रसाद उपाध्याय, आर्यमुनि इत्यादि हमारे महापुरुषों ने वेदज्ञान की अविरल धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कठिन परिश्रम किया और प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन कर पुस्तकों के रूप में उसे वितरित भी किया। इसी ज्ञान संपदा की बदौलत आज हम देश के कोने-कोने में और विश्व के 32 से अधिक देशों तक विस्तार कर पाए हैं। इस क्रम को लगातार आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए पंडित लेखराम ने कहा था कि विचारशीलता और लेखन का कार्य आर्यसमाज की ओर से निरंतर चलते रहना चाहिए। परिणाम स्वरूप आर्य समाज के सैकड़ों सुप्रसिद्ध संन्यासियों और विद्वानों ने वैदिक साहित्य कोष की निरंतर अभिवृद्धि की। इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत वैदिक प्रकाशन अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

वैदिक प्रकाशन का उद्देश्य

दिल्ली सभा के अंतर्गत संचालित वैदिक प्रकाशन द्वारा जो वैदिक साहित्य-पुस्तकें प्रकाशित कर विक्रय की जाती हैं, उनमें सभा का उद्देश्य आर्थिक लाभ अर्जित करना बिल्कुल नहीं है। बल्कि वैदिक ज्ञानधारा और आर्य विचारधारा का प्रचार प्रसार ही हमारा प्रमुख लक्ष्य है।

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की संक्षिप्त सूची

- सत्यार्थ प्रकाश☆ परफैक्ट, सत्यार्थ प्रकाश हार्ड, सत्यार्थ प्रकाश गिफ्ट, सत्यार्थ प्रकाश उपहार, सत्यार्थ प्रकाश उर्दु, सत्यार्थ प्रकाश ब्रेललिपि • सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी
- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका • वेद सैट(अंग्रेजी)
- महर्षि दयानन्द चरित [ले.(पं.लेखराम)]
- मनुस्मृति • विशुद्ध मनुस्मृति • मनु का विरोध क्यों? OPPOSITION TO MANU WHY? • व्याख्यान शतक • वैदिक विनय
- पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी☆ हिन्दी • पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी अंग्रेजी • महर्षि दयानन्द लघु ग्रंथ संग्रह • आर्य विवाह एक्ट • आर्य समाज के नियम उपनियम • महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय • उपनिषदों की कहानियां
- युगधर्म • क्या ईश्वर अवतार शास्त्र सम्मत है? • आनन्द का मार्ग उपासना
- आर्य ध्वज • भारत का एक ऋषि • श्री राम • नैतिक शिक्षा 1 से 12 तक • नैतिक शिक्षा ज्ञान, व्यवहार कुशलता • पाताञ्जल योगदर्शन • उपनिषद्-भाष्य • हिन्दू संगठन
- वेदों को माने • गागर में सागर • आर्य मान्यताएं • स्वामी दयानन्द (ले.संतराम)
- महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवनी (ब्रेललिपि) • महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह
- श्रीहनुमच्चरितम् • सत्यार्थ प्रकाश एवं सरल व्याख्या • वैदिक सत्संग गुटका
- बाल लघु सत्यार्थ प्रकाश • एक निमंत्रण
- मानव कल्याण के सूत्र • अग्निहोत्री पत्रक • शगुन लिफाफे • नेम सिलप
- यज्ञ अनुसंधान पत्रक

कामिक्स

- स्वामी दयानंद पंजाबी • स्वामी श्रद्धानंद
- महात्मा हंसराज • लालालाजपत राय
- रामप्रशाद विस्मिल • सुभाषचन्द्र बोस
- चंद्रशेखर आजाद • भगत सिंह
- स्वमी दयानंद मिनि कामिक्स
- महर्षि दयानंद के अनुयाई • प्यारा ऋषि

वैदिक प्रकाशन प्रचार स्टाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित वैदिक प्रचार स्टाल पर अपनी प्रकाशित पुस्तकें, वैदिक साहित्य, वेद-उपनिषद, दर्शन, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि अनेक अन्य पुस्तकें, हवनकुंड, सामग्री, यज्ञपात्र, ओम ध्वज, पीतवस्त्र, स्टीकर, दीवार घड़ी, स्मृति चन्हि आदि समस्त उपयोगी सामान एक ही स्थान पर उपलब्ध है। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाने वाला यह प्रचार स्टाल पूरे नियम और व्यवस्था के साथ लगातार कार्य कर रहा है।

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयंती पर हर आयु वर्ग के लिए उपयोगी और प्रेरक उपहार

बंधुओ, महर्षि दयानन्द की 200वीं जयंती के दो वर्षीय वृहद आयोजनों की श्रखला निरंतर चल रही है, इस अवसर पर हमें महर्षि दयानन्द जी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश सहित उनके समस्त ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार अवश्य करना चाहिए। इसके साथ ही आर्य जगत वैदिक पर्व, त्यौहारों, वार्षिकोत्सव आदि विविध आयोजन हर्षोल्लास से हो रहे हैं। अतः हम विचार करें कि इन पर्वों पर जो विशेष उपहार एक दूसरे को भेंट करते हैं, उनमें कुछ ऐसे उपहार भी अवश्य सम्मिलित करें जो हर आयु वर्ग के लिए उपयोगी और प्रेरक हों। इसके लिए दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य की सचित्र सूची ऊपर दी गई है, आप सभी आर्यजन अपने स्वजनों को वैदिक साहित्य भेंट करके एक नई पहल करें। -महामंत्री संपर्क सूत्रः- 9540040339, bit./VedicPrakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

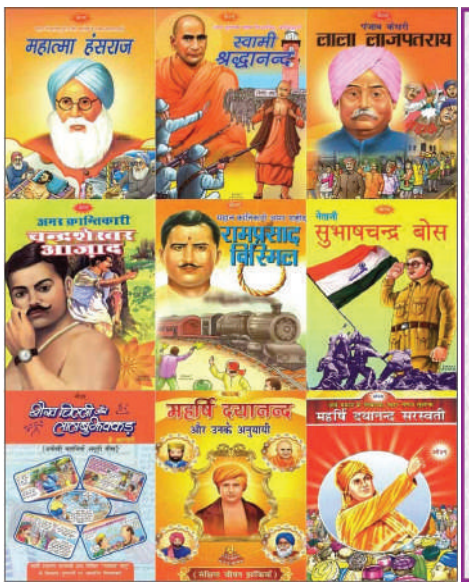

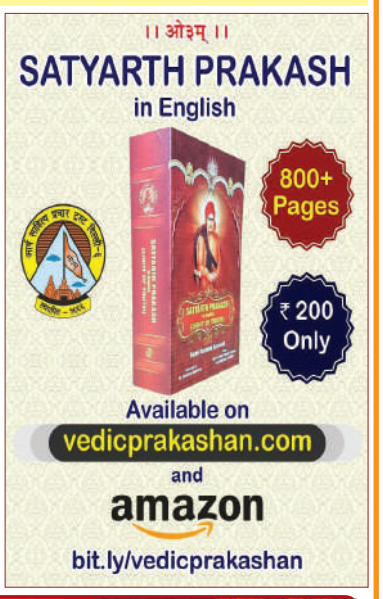

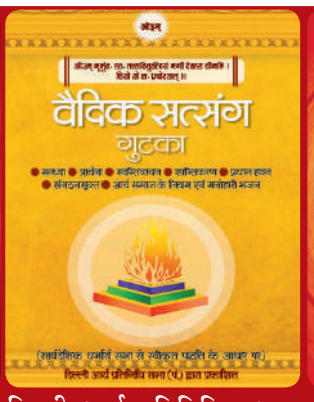

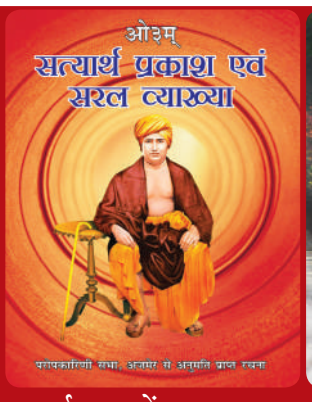

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नई पुस्तकों का प्रकाशन

Continuing the last issue

What the Vedas Stand for

This verse can be translated as 'Namaste be done to the elderly people and to the young; Namaste be to the senior in age and to the junior in age; Namaste be to the middling and to the unobstinate; and Namaste be to the lowest in rank and to the ignorant' Rigved, 1.27.13, states the same. Namo Astu, Namaste, Naman or bowing down be done is recommended by Yajurved, 16. 64-66. That the actual full expression is Namaste is made specificaly clear in Yajurved, 17.11, 36.21, 37.20, which Namaste Bhagavan (36.21) or Namaste be to you is most important and pointed.

According to the Vedas, as sanctioned by the common sense, all human beings are children of the Immortal Being and dependent on Him (Rigved, 10.13.1; Yajurved, 11.5; Atharvaved, 18.3.39), and as such, the unallied common Father makes no basic distintion between man and man, levelling them by the facts of birth, existence and death. They should, therefore, in keeping with the Divine set up of things, respect one another and wish by uttering the expression or sentense Namaste as members of the brotherhood of man under the fatherhood of God, without going into or recalling who is who or what is what.

In India, until recently, they used to come to grips with one another over various sectarian forms of salutations, calling or reciting the names of their deified heroes of admiration, totally different from one another, circumscribed around Brahma, Vishnu, Mahesh, Ram, Krishna, etc. With the last Vedic renaissance, brought about by S vami Dayanand in the 19th century, this problem has, finally, been settled and they have once again taken whole-heartedly to the original, Divine, Vedic expresiion and mode of saluting and wishing people, the all-covering Namaste. This has also done away with the practices of wishing people with refence to this or that period of time—morning, day, afternoon, evening and night—and kissing, hugging or shaking hands.

When two persous meet or part with, they should face each other, clasp their hands, put them in front of the heart region, bow their foreheads slightly, and in a cheering tone, one should utter Namaste (I respect you), and the other should reciprocate the same. Hands may be said to represent body, heart region is the seat of soul, and head is the location of mind. Namaste, therefore, means that I respect you, irrespective of who you be or what you be, with the best possible harmony of body, mind and soul in keeping with the brotherhood of man and the fatherhood of God.

हर आयु वर्ग के लिए सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा का विशेष आयोजन

परीक्षा तिथि:- 25 जून, 2023 रविवार **समय:**- 12:00 से 1:00 तक
पंजीकरण तिथि:- 15 जून, 2023 **पंजीकरण शुल्क:**- 100/-
स्थान:- आर्य समाज मंदिर इंदिरा पार्क पालम कॉलोनी नई दिल्ली
नियम:- परीक्षा में कुल 10 प्रश्न पूछे जाएंगे और सभी प्रश्न सत्यार्थ प्रकाश से होंगे। प्रत्येक सही उत्तर का पुरस्कार राशि 1000/- होगी तथा जिसके सभी 10 उत्तर सही होंगे उसे 11000/- का पुरस्कार दिया जाएगा।

- परीक्षा के बाद सभी के लिए भोजन की व्यवस्था रहेगी।
- निर्णायक मंडल का निर्णय सर्वमान्य होगा

पंजीकरण शुल्क (मोबाइल नंबर 9810197504) विनोद कुमार, पेटीएम अथवा गूगल पे पर भेज सकते हैं। शुल्क भेजने के बाद स्क्रीनशॉट व्हाट्सएप अवश्य करें।

- सभी परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा।
- परीक्षा से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए श्री सुखबीर सिंह आर्य (मोबाइल नंबर 9350502175) पर संपर्क करें।

निवेदक- महाशय प्रीतम सिंह आर्य, प्रधान, आर्य समाज इंदिरा पार्क पालम कॉलोनी नई दिल्ली-45, फोन नंबर 8447434774

वैदिक प्रचारक निर्माण शिविर संपन्न

आत्मोन्नति केन्द्र, तपोभूमि, भड़ताना, जि.जींद, हरियाणा में (29 मार्च से 05 अप्रैल तक) वैदिक प्रचारक निर्माण शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस शिविर में वैदिक सिद्धांतों के व्यवहारिक प्रशिक्षण के साथ-2 मंच पर माइक में प्रस्तुति देने का विशेष अभ्यास कराया गया। सत्य सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ, शांतिपूर्ण व्यवहार एवं सुलझी हुई भाषा के माध्यम से शीघ्र कैसे संभव हो सकता है आदि बातों को भी विस्तार पूर्वक हृदयंगम कराया गया।

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

अधर्म-पुण्य-अपुण्य

3-अधर्म

ईश्वर-आज्ञा छोड़कर,
पक्षपात, अभिमान ।
अनय, अविद्या, क्रूरता,
हठ का हो आधान ।।7।।
यही वेद-विपरीत जो
ताने स्वार्थ-वितान ।
यह 'अधर्म' का रूप ही
सदा हेय है, जान ।।8।।

4-पुण्य

शुभ गुण विद्या आदि
का जिसमें होता दान ।
सदाचार, सच बोलना
यही 'पुण्य' पहिचान ।।9।।

5-अपुण्य

जो विरुद्ध हो पुण्य से
मिथ्यादिक संल्लाप ।
सकल शास्त्र कहते उसे
'पाप' ताप सन्ताप ।।10।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

शव का दाह-कर्म ही होगा

लहलहाती है खेती दयानन्द की।

मारीशस में सरकारी नियमानुसार किसी शव का दाह-कर्म नहीं किया जा सकता था। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ की घटना है कि मारीशस में एक सैनिक टुकड़ी आई। इनमें कुछ हरियाणा व पंजाब के आर्य-सैनिक भी थे। इनमें से किसी की मृत्यु हो गई। नियमानुसार उसे दबाने के लिए कहा गया। आर्यवीर सैनिकों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। सरकार ने पुलिस की सहायता से शव को भूमि में गाड़ना चाहा, परन्तु ये सैनिक विद्रोह पर तुल गये। सरकार को ललकारा- देखते हैं कि हमारा शव कौन छूता है? सरकार झुक गई। आर्यों की मारीशस में यह पहली बड़ी जीत थी। मारीशस में यह प्रथम दाह कर्म था।

यही लोग जाते-जाते सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति दो-एक मित्रों को दे गये। आर्यसमाज का बीज बोने वाले यही थे। आज तो-

निश्चय ही ये सब लोग नींव के पत्थर थे। कृतज्ञता इस बात की माँग करती है कि मैं पाठकों को यह स्मरण कराऊँ कि स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज केवल सेनानी के रूप में ही इतिहास बनाने वाले न थे, अपितु इतिहास के गम्भीर विद्वान् तथा इतिहास को सुरक्षित करने वाले भी थे। मारीशस को भारत से जोड़ने वाले, इस द्वीप के महत्त्व को समझने व समझाने वाले तथा इसका इतिहास व भूगोल लिखने वाले वे प्रथम भारतीय विद्वान् व नेता थे। उस दूरदर्शी साधु की दृष्टि ने तब मारीशस का महत्त्व जाना जब भारत के सब राजनैतिक नेता गहरी नींद में सोये हुए थे। यह उपर्युक्त सब सामग्री उन्हीं की पुस्तक से ली गई है।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-II
एम-ब्लाक, गुरुद्वारा रोड,
नई दिल्ली-110048
प्रधान : श्री सहदेव नागिया
मन्त्री : श्री एस. के. कोहली
कोषाध्यक्ष : श्री प्रिय ब्रत

गुरु विरजानंद गुरुकुल महाविद्यालय करतार पुर द्वारा पंजाब प्रांतीय आर्य वीर दल शिविर का आयोजन

दिनांक:- 25 मई से 31 मई 2023
स्थान:- गुरु विरजानंद गुरुकुल करतारपुर
आयु सीमा 14 वर्ष से 50 वर्ष तक केवल पुरुष वर्ग
सहयोग राशि 500/- प्रति शिविरार्थी
शिविर में भाग लेने और अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र- 8902316857, 9872073108, 9646986132, 8699134423
शिविर संयोजक- उदयन आर्य, संचालक, आर्यवीर दल पंजाब प्रांत 9803043271, सह संयोजक- योगेश दत्ता, महामंत्री आर्यवीर दल पंजाब प्रान्त 9888963063

अधिकांश रूप से यह अनुभव किया जाता है कि स्थान विशेष पर या समय विशेष पर वैदिक सूक्तियों और प्रेरक सुभाषितों की आवश्यकता होती है। जैसे स्कूल में, गौशाला में, आश्रमों में, खेल के स्थानों पर, पर्व, उत्सव, सम्मेलन, महासम्मेलन, प्रभात फेरी, शोभायात्रा आदि में प्रेरणाप्रद प्रमाणिक वाक्य लिखने के लिए हम समय-समय पर विचार करते हैं। किन्तु उस समय पर हमें वह उपयोगी मैटर मिल नहीं पाता। अतः आर्य संदेश के सुधी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रोक्त वचनों के प्रचार-प्रसार हेतु हमने एक नियमित कालम प्रारम्भ किया है। जिसमें हर बार कुछ सूक्तियां निरंतर प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। -संपादक

वैदिक सूक्तियां

14- शयन कक्ष में-

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

-यजु०-34-1

(हे ईश मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो)

15- यात्रा स्थलों में-

स्वस्तिः पन्था मनु चरेम

-ऋ०-5-51-15

(हे ईश हमारा मार्गकल्याणाकरी हो)

16- ऊर्जा सम्बन्धी-

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थूषश्य

-यजु०-7-42

(सूर्य संपूर्ण संसार का ऊर्जा स्रोत है।)

17- जल सम्बन्धी-

स जनास इन्द्रः

-अथर्व०-20-34-7

(वह परमात्मा जल का स्वामी है।)

18- वर्ण आश्रम सम्बन्धी-

धर्म्माचार्य्या जघन्यो वर्णाः

-स०प्र० चतुर्थ सम्मुल्लास

(धर्माचरण से निकृस्ट वर्ण अपने उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है।)

महर्षि दयानन्द की प्रेरक शिक्षाएं

स्वदेशी का संदेश- परदेशी स्वदेश में व्यवहार व राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।

-सत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास पृष्ठ- 251

गोरक्षा संदेश- हे राजपुरुष, जैसे सूर्य मेघ को मार और उसको भूमि में गिराकर सब प्राणियों को प्रसन्न करता है। वैसे ही गौओं को मारने वालों को मार गो आदि पशुओं को निरंतर सुखी करो।

-ऋग्वेद भाष्य 1/21/10

किसान की महिमा- जो जन भूमि के गुणों को जानने वालों की विद्या को जानके उससे उपयोग करना जानते हैं वे अत्यन्त बल को पाकर सब पृथ्वी का राज्य कर सकते हैं।

-ऋग्वेद भाष्य 1/160/5

राष्ट्र प्रेम- जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। **-सत्यार्थ प्रकाश 11वाँ समुल्लास**

आर्य समाज यमुना विहार के तत्वाधन में वैदिक विद्वान स्वामी विवेकानंद जी परिवाज्रक (रोजड गुजरात) के निर्देशन में

चार दिवसीय सरल आध्यात्मिक शिविर कार्यक्रम **20 अप्रैल** सायं 08:00 से 09:30से **23 अप्रैल** 11-30 आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

सम्पर्क सूत्र

प्रधान- 9818256468

मंत्री- 8130637313

परोपकारिणी सभा अजमेर राजस्थान के द्वारा

नया गुरुकुल (छात्रावास)

प्रवेश प्रारम्भ **शुभारम्भ** प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द आश्रम

ग्राम-जमानी, इटारसी (म.प्र.)

दिनांक 30 अप्रैल 2023 दिन रविवार से

गुरुकुल (छात्रावास) में न्यूनतम तीसरी से अधिकतम छटवीं कक्षा पास बालकों के लिए

आवास, वस्त्र, भोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क रहेगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

आचार्य सत्यप्रिय जी

मो. 7509706828

हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो

10 एवं 20 किलो

की पैकिंग में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

मो. 9540040339

पृष्ठ 4 का शेष

देवेन्द्र दत्ता ने राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में आज की वर्तमान परिस्थिति पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री हरपाल जी, श्रीमती सुधा बत्रा, पानीपत की समस्त आर्य समाजों के अधिकारी उपस्थित रहे। नन्हें मुन्ने बालकों की प्रस्तुती प्रशंसनीय रही। समाज के संस्थापक पं. श्री जगदीश चन्द्र वसु ने सभी का अभिनन्दन एवं धन्यवाद किया। मंच संचालन निर्मला वसु ने किया। **-मनीषा शर्मा, मंत्री**

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

ओ३म्

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए

उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण

(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ **सत्यार्थ प्रकाश** सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60	
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50	
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100	
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100	
उपहार संस्करण	₹1100	₹750	
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130	
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170	

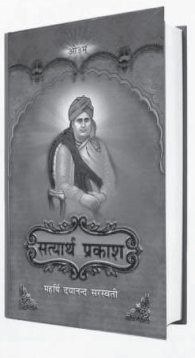

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph : 011-43781191, 09650522778

E-Mail : aspt.india@gmail.com

शोक समाचार

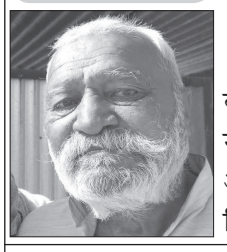

श्री राजकुमार सिंह जी का निधन

आर्य समाज के वैदिक विद्वान एवं उत्तराखण्ड सभा के पूर्व प्रधान श्री विनय विद्यालंकार जी के बड़े भ्राता श्री राजकुमार सिंह जी का अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उनके पैतृक गांव में किया गया।

श्रीमती नीलम राणा जी का निधन

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के महामंत्री श्री जनमेजय राणा जी की धर्मपत्नी श्रीमती नीलम राणा जी का 14 अप्रैल 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। और 17 अप्रैल को गुरुग्राम में रस्मपगड़ी संपन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 17 अप्रैल, 2023 से रविवार 23 अप्रैल, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 19-20-21 अप्रैल, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 19 अप्रैल, 2023

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आगामी कार्यक्रम

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक आर्यवीर दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 01 से 15 जून 2023

स्थानः- गुरुकुल विश्वभारती भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक- 124001 (हरियाणा)

शिविराध्यक्षः- स्वामी देवव्रत सरस्वती

इस शिविर में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी को शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्कः उप व्यायाम व व्यायाम शिक्षक 1000/- रुपये, शाखानायक 800/- रुपये।

आवश्यक सामानः खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद मोजे व जूते, लाठी, नोटबुक, अन्य दैनिक प्रयोग में आने वाला आवश्यक सामान। पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

शिविर में अनुशासन का पालन अनिवार्य होगा। अनुशासन न मानने वाले शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकेगा।

अपने साथ कीमती सामान न लायें।

सम्पर्क करें

आचार्य हरिदत्त उपाध्याय
शिविर संयोजक

स्वामी देवव्रत सरस्वती
शिविराध्यक्ष
9868620631

सत्यवीर आर्य
प्रधान संचालक
9417489461

आचार्य नन्दकिशोर
शिविर प्रबन्धक
9466436220

प्रवीण शास्त्री स्वामी
प्रधान व्यायाम शिक्षक
9467071733

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 16 से 23 जून 2023

स्थानः- आर्ष महाविद्याल कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली- 110040

शिविराध्यक्षः- स्वामी देवव्रत सरस्वती

सार्वदेशिक आर्यवीर दल की इकाई सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 16 से 24 जून 2023 तक कन्या गुरुकुल नरेला में लगाया जायेगा जिसमें आर्य वीरांगनाओं को शाखानायक श्रेणी की शारीरिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्कः 600/- रुपये।

आवश्यक सामानः गणवेश सफेद कुर्ता, सलवार, सफेद मोजे व जूते, केसरिया चुन्नी, लाठी, नोटबुक, अन्य दैनिक प्रयोग में आने वाला आवश्यक सामान पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आर्य वीरांगना आर्य वीरांगना दल अथवा आर्य समाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, अपना पासपोर्ट फोटो, आधार कार्ड की फोटोकापी भी लायें।

जिन्होंने आर्य वीरांगना दल की प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की है, उन्हीं को प्रवेश मिलेगा। अपने साथ कीमती सामान न लायें।

मार्गः पुरानी दिल्ली से 131, 136 नम्बर बस पकड़कर कन्या गुरुकुल पहुंचें। दिल्ली से रेल द्वारा नरेला रेलवे स्टेशन से टैम्पो द्वारा कन्या गुरुकुल पहुंचें।

सम्पर्क करें

सोमवीर शास्त्री
महामंत्री
9999299300

आचार्य सविता
आचार्या
9999655363

चौधरी देवीसिंह मान
प्रधान

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में

40वां वैचारिक क्रांति शिविर

दिनांक- 19 मई से 28 मई 2023 तक

स्थानः- आर्य समाज मंदिर, मेन बाजार, रानी बाग

उद्घाटन समारोहः- शुक्रवार 19 मई 2023 शाम 06:00

संकल्प दिवसः- रविवार 21 मई 2023 प्रात: 10:00

समापन समारोहः- रविवार 28 मई 2023 सायं 4:00 बजे

शिविर में भाग लेने के लिए शिविर्थी संपर्क करें।

जोगेन्द्र खट्टर 9810040982, आचार्य दया सागर 9425944843

कार्यक्रमानुसार आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

JBM Group
Our milestones are touchstones

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह